

## 232335 - नमाज़ में तशहहूद

### प्रश्न

आखिरी तशहहूद में, मैं 'अस्सलामो अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन'' (शांति हो हम पर और अल्लाह के सदाचारी बंदों पर) के बजाय ''अस्सलामो अलैका व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन'' (शांति हो आप पर और अल्लाह के सदाचारी बंदों पर) कहता हूँ।

### विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह के लिए योग्य है।

सर्व प्रथम :

आखिरी तशहहूद नमाज़ के स्तंभों में से एक स्तंभ है, और पहला तशहहूद नमाज़ के वाजिबात में से एक वाजिब है, जैसा कि हमने प्रश्न संख्या: (65847), (125897) के उत्तर में उल्लेख किया है।

दूसरा :

मुसलमान को चाहिए कि वह नमाज़ और उसके अलावा के बारे में वर्णित शरई अज़कार (दुआओं) के शब्दों की पाबंदी करे और जितना संभव हो उनमें कुछ भी परिवर्तन न करे।

बुखारी (हदीस संख्या: 6265) और मुस्लिम (हदीस संख्या: 402) ने इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि उन्होंने ने कहा : "अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे तशहहूद सिखाया, जबकि मेरी हथेली आप की दोनों हथेलियों के बीच में थी, जिस तरह कि आप मुझे कुरआन की सूरात सिखाया करते थे।"

इसका मतलब : तशहहूद के शब्दों पर अधिक ध्यान देना है, अतः उनमें न वृद्धि करे और न उनमें कमी करे और न ही उनमें कुछ परिवर्तन करे, जैसा कि इसी तरह का एहतिमाम (ध्यान) पवित्र कुरआन के साथ करते थे।

इसके आधार पर, नमाज़ी के लिए यह अनुमति नहीं है कि : वह 'अस्सलामो अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन'' (शांति हो हम पर और अल्लाह के सदाचारी बंदों पर) के बजाय ''अस्सलामो अलैका व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन'' (शांति हो आप पर और अल्लाह के सदाचारी बंदों पर) कहे, क्योंकि यह पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वचन में बदलाव है, और क्योंकि यह अर्थ को बदल देता है।

अतः हमारी आपके लिए यही सलाह है कि आप पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित शब्द का पालन करें, और – हमारे ज्ञान के अनुसार – नमाज़ की विधि और इसमें वर्णित अज़कार और दुआओं के विषय में सबसे अच्छी किताब शेख अल्बानी रहिमहुल्लाह

की किताब "सिफतो सलातिन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम" है। अतः उस पुस्तक का एक नुस्खा प्राप्त करने, उसे पढ़ने और उसमें वर्णित बातों के अनुसार काम करने की लालायित बनें।

और अल्लाह तआला ही सबसे अधिक ज्ञान रखता है।